AYU

Access this article online
Website: www.ayujournal.org
DOI: 10.4103/0974-8520.82034
Quick Response Code:

Review Article

आत्रेय विरचित सारसंग्रह में मूत्रपरीक्षा वर्णन

आर. के. जखमोला

आयुर्वेदीय स्नातकोत्तर शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान, गुजरात आयुर्वेद युनिवर्सिटी, जामनगर, भारत

सारांश

आत्रेय विरचित सारसंग्रह में नाड़ी परीक्षा के पश्चात् मूत्रपरीक्षा का विस्तृत वर्णन किया गया है। जिस मूत्र परीक्षण हेतु सावधानियाँ, त्रिदोषज मूत्र के भिन्न-भिन्न स्वरुप, स्वस्थ एवं रोगी के मूत्र में विभेद, आमदोष एवं निराम के मूत्र में भेद, साध्य एवं असाध्य रोगी के मूत्र के लक्षण, जीर्ण एवं अजीर्ण स्थिति में मूत्र की स्थिति विविध प्रकार के रोगों से ग्रसित रोगी के मूत्र लक्षण एवं वर्ण विशेष आदि का सम्यक् वर्णन किया हुआ है।

पश्चात्ये रजनीयामे घटिकानां चतुष्टये।
उत्थाय रोगीणां वैद्यो मूत्रोत्सर्गं तु कारयेत् ॥१॥

रात्री के अन्तिम प्रहर में चार घड़ी रात शेष हो, वैद्य रोगी को जगाकर मूत्र त्याग करवाना चाहिए।

श्वेतकांचमये पात्रे धृत्वा मूत्रं परीक्षयेत्।
आद्यधारां परित्यज्य मध्यधारा समुद्भवम् ॥२॥

मूत्र की प्रथम धारा को छोड़कर मूत्रोत्सर्ग काल की बीच की धारा को स्वच्छ श्वेत कांच के पात्र में एकत्रित कर मूत्र परीक्षा करनी चाहिए।

तृणेन तैलमादाय बिंदौ मूत्रयुते सति ॥
जायंते बुद्बुदास्तत्र विकारः सोऽस्ति पित्तजः ॥३॥

लकड़ी की शलाका से तेल लेकर तेल की एक बूँद मूत्र में डालने पर यदि मूत्र में बुलबुले उत्पन्न हों तो पित्तज विकार समझने चाहिए।

स्निग्धं तु श्यामलच्छायां वाते मूत्रं प्रजायते।
तरीमुपरि बध्नाति तैलं बिन्दुयुतं तथा ॥४॥

वातदोष प्रकुपित होने पर मूत्र में तेल की बूँद डालने पर मूत्र चिकना और कालिमा युक्त प्रतिबिम्ब दृष्टिगोचर होता है और उसके उपर परत बन्ध जाती है।

मूत्रं श्लेष्मणि जायेत् समं पल्वलवारिणा ॥
मूत्रेण साकं निलयं तैलबिन्दुः प्रजायते ॥५॥

कफ दोष वाला मूत्र छोटे तालाब के पानी जैसा मटमैला हो जाता है। मूत्र में डाली हुई तेल की बूँद उसमें मिल जाती है।

सिद्धार्थतैलसदृश्यं मूत्रं वै पित्तमारुते।
तैलबिन्दुस्तथाक्षिप्तश्चतुर्दिक्षुविसर्पति ॥६॥

वात-पित्त दोषज रोगी का मूत्र सरसों के तेल जैसे होता है, उसमें तेल की बूँद डालने से वह चारों ओर फैल जाता है।

श्लेष्मवातेभवेन्मूत्रं सौवीरेण समं तथा
पांडुरं श्लेष्मपित्ते च पीतं चैवं परीक्षयेत् ॥७॥

कफ-वात दूषित रोगी का मूत्र सौवीर नामक मद्य के समान होता है, कफपित्त दोष उत्पन्न होने पर पांडु तथा पीतवर्ण होता है।

सन्निपाते च यन्मूत्रं कृष्णं संबक्षयेद्बुधः।
तैलबिन्दुस्तथाक्षिप्तौ बुदबुदार्हिभवन्ति च ॥८॥

सन्निपात से ग्रसित रोगी का मूत्र काला होता है ऐसा विद्वान वैद्य कहते हैं। उस मूत्र में तेल की बूँद डालने से बुलबुले उत्पन्न होते है।

श्वेतधारा शुभाधारा पीतधारा च मध्यमा।
रक्तधारा दीर्घरोगाः कृष्णधारा च मृत्युदा ॥९॥

मूत्र की श्वेत धारा स्वस्थता की परिचायक होती है। पीले रंग की मध्यम होती है अर्थात् अल्पदोष युक्त होती है। लालरंग दीर्घ काल से रोगग्रस्त और कालिमायुक्त (कृष्णवर्ण) मृत्युकारक होती है।

सौवीरेण समं मूत्रं मातुलुङ्गसमप्रभम्।
पानीयेन समं मूत्रं परिपाके हितं भवेत् ॥१०॥

जो मूत्र सौवीर नामक मद्य के समान बीजपूर (केसराम्ल) के सदृश

Address for correspondence: R. K. Jakhmola, Bhashashastri, Gujarat Ayurved University, Jamnagar, Gujarat, India.
E-mail: ayujournal@yahoo.com

तथा पानी के समान परिपाक हो, वह स्वस्थता का प्रतीक होता है।

कफात् पल्वल पानीय तुल्यं मूत्रं प्रजायते।
रक्तवातेन रक्तं स्यात् कुसुंभं पित्ततो भवेत् ॥११॥

कफ दोष से पीड़ित रोगी का मूत्र तालाब के जल के समान मटमैला होता है। रक्तवात से पीड़ित होने पर लाल और पित्त दोष से पीताभ होता है।

वातात् जलसमानं च अर्द्धाद्बहुलमेव च ॥
तैल तुल्यं भवेन्मूत्रं नित्यं सहज पित्ततः ॥१२॥

वायुदोष प्रकुपित होने पर मूत्र जल के समान होता है, आधामूत्र विसर्जन होने के बाद मूत्र की मात्रा अधिक हो जाती है। पित्तदोष के कारण मूत्र हमेशा तेल के समान होता है।

अधो बहुलमारक्तं मूत्रमालोक्यते यदा।
वदति तदतिसारं लिंगतोलिंग वेदिनः ॥१३॥

पात्र में स्थित मूत्र का निचला भाग जब बहुत लाल दिखाई देता है तब मूत्र लक्षणों को जानने वाले उसे अतिसार का लक्षण कहते हैं।

वातश्लेष्मवशान्मूत्रं श्वेतस्वच्छं प्रजायते।
जलोदर समुद्भूतं मूत्रं घृतकणोपमम् ॥१४॥

वात-कफ दोषों से दूषित मूत्र सफेद और स्वच्छ होता है जलोदर से पीड़ित मूत्र में घी के कण जैसे दिखाई देते हैं।

निरामवातादच्छं च सुश्वेतं च प्रजायते।
आमवातात्तथामूत्रं तक्रतुल्यं प्रजायते ॥ १५॥

आम दोष रहित वातदोष प्रकुपित रोगी का मूत्र स्वच्छ और सफेद होता है, आम दोष तथा वातदोष युक्त रोगी का मूत्र तक्र के समान होता है।

वातज्वरसमुद्भूतं मूत्रं कुंकुमपिंजरम्।
मलकृत्पीतवर्णं च बहुलं च प्रजायते ॥१६॥

वातज्वर से उत्पन्न मूत्र केसर के समान पीलापन होता है। मलदोष के उत्पन्न होने से मूत्र पीला और अधिक मात्रा में होता है।

पीतमच्छं च जायेत् मूत्रं पित्तज्वरं तथा।
समधातौ पुनः कूपजलतुल्यं प्रजायते ॥१७॥

पित्तज्वर दोष युक्त मूत्र पीला और स्वच्छ होता है। शरीर में धातुओं की साम्यावस्था होने पर मूत्र पुनः कुएँ के जल के समान स्वच्छ होता है।

उर्ध्वं नीलमधोरक्तं रुधिरेण प्रजायते।
रक्तं श्लेष्मवशात् कृष्णमसाध्यं मूत्रमुच्यते ॥१८॥

रक्तविकार होने से मूत्र उपर से नीले रंग का होता है। रक्तश्लेष्म सम्बन्धी विकार उत्पन्न होने पर मूत्र कृष्ण वर्ण का हो,तो वह रोगी असाध्य होता है।

पीतवर्णं यदा पश्येत् तैलतुल्यं सबुद्बुदम्।
तदप्यसाध्यं निर्दिष्टं मूत्रं वैद्यकवेदिभिः ॥१९॥

जब मूत्र पीले रंग का दिखाई दे, तेल के समान तथा बुलबुले उठते हों तो कुशल चिकित्सकों ने उसको भी असाध्य बताया है।

अजीर्णे तु भवेन्मूत्रं श्वेतं चापि तथारुणम्।
अजामूत्र समं मूत्रमजीर्ण ज्वर संभवम्॥२०॥

अजीर्ण होने की स्थिति में होने वाला मूत्र श्वेत अथवा लालिमा युक्त होता है, अजीर्ण ज्वर उत्पन्न होने रोगी का मूत्र बकरी के मूत्र के समान होता है।

मूत्रं च कृष्णतां याति क्षयरोगो यदाकिल।
क्षयरोगात् भवेत् श्वेतमसाध्यं तच्चनिर्दिशेत् ॥२१॥

क्षय रोग से ग्रसित रोगी का मूत्र कृष्णवर्ण का होता है। क्षय रोग के कारण उत्पन्न श्वेत मूत्र असाध्य होता है।

प्रवर्त्तते यदा मूत्रं स्निग्धं तैलसमप्रभम्।
आहारमुदरस्थश्च वृद्धिं याति तदानिल ॥२२॥

जब मूत्र चिकना और तेल के समान दिखाई दे तथा उदरस्थ आहार परिपाचित न हुआ हो तो वायुवृद्धि हुई है,ऐसा समझना चाहिए।

उर्ध्वं पीतमधोरक्तं मूत्रं चेत् रोगिणस्तथा।
पित्तप्रकृति संभूतं सन्निपातस्य लक्षणम् ॥२३॥

जिस रोगी का मूत्र उपर से पीला और निचला भाग लालिमायुक्त हो तो पित्तप्रकृति से उत्पन्न सन्निपात के लक्षण जानने चाहिए।

यस्येक्षुरससंकाशं मूत्रं नेत्रे च पाण्डुरे।
रसाधिक्यं विजानीयात् लंघनं तस्य निर्द्दिशेत् ॥२४॥

जिस रोगी का मूत्र गन्ने के रस के सदृश हो और आँखे पीली हों उस रोगी के शरीर में अन्नरस की अधिकता हो गई है ऐसा समझना चाहिए, ऐसे रोगी को उपवास करने का निर्देश करना चाहिएं।

पीतं च बहुलं चैव आमवाताच्च जायते।
रक्तं स्वच्छतरं मूत्रं तत् ज्वराधिक्यलक्षणम् ॥२५॥

आमवात वाले रोगी का मूत्र पीले रंग का तथा अधिक मात्रा में होता है। जिस रोगी को तीव्रज्वर हो उसका मूत्र लाल रंग तथा स्वच्छतर होता है।

धूम्रवर्णं यदा मूत्रं ज्वराधिक्यं वदेत्तदा।
कृष्णमच्छं च जानीयात् सन्निपातज्वरोद्भवम् ॥२६॥

जब मूत्र धूम्रवर्ण का हो तब वह ज्वराधिक्य से पीड़ित रोगी का है। जब कृष्णवर्ण और स्वच्छ हो तो सन्निपातज्वर से उत्पन्न समझना चाहिए।

पीतं तथा परिच्छायं कृष्णबुद्बुद्संयुतम्।
मूत्रप्रसूति दोषेण संशयोनास्ति कश्चन ॥२७॥

जो मूत्र पीले वर्ण, कालिमा छायायुत और बुलबुले युक्त हो, वह प्रसूति दोष से उत्पन्न है, इसमें किसी प्रकार का सन्देह नहीं है।

इतिमूत्र परीक्षा।

Abstract

Description of *Mutra Pariksha* (urine examination) in Atreya Virachita sara sangraha

R. K. Jakhmola

Atreya in his sara sangraha, after *Nadi pariksha*, described / elaborated in detail the *mutra pariksha*. Under this he appropriately described various precautions for urine examination, various characteristics of *mutra* vitiated by *Tridosha*, differentiation of urine of diseased & normal person characteristics of *sama* & *nirama*, *mutra*, characters, *mutra* of *sadhya* & *Asadhya rogi* characters of *murta* in *jeerna* & *Ajeerna* (indigestion) conditions etc.